**---無上甚深微妙法，百千萬劫難遭遇，我今見聞得受持，願解如來真實義。---**

**佛說十善業道經**

**弟子：　　　　　　　　　第　　　遍於民國　　年　　月　　日抄誦**

## 1.([本段白話註解](../law-book/十善業道經白話.docx#a1))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 如 | 是 | 我 | 聞 | ， | 一 | 時 | 佛 | 在 | 婆 | 娑 | 竭 | 羅 | 龍 | 宮 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 與 | 八 | 千 | 比 | 丘 | 眾 | ， | 三 | 萬 | 二 | 千 | 菩 | 薩 | 摩 | 訶 | 薩 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 俱 | 。 | 爾 | 時 | ， | 世 | 尊 | 告 | 龍 | 王 | 言 | ： | 一 | 切 | 眾 | 生 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 心 | 想 | 異 | 故 | ， | 造 | 業 | 亦 | 異 | ， | 由 | 是 | 故 | 有 | 諸 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 趣 | 輪 | 轉 | 。 | 龍 | 王 | ！ | 汝 | 見 | 此 | 會 | 及 | 大 | 海 | 中 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 形 | 色 | 種 | 類 | ， | 各 | 別 | 不 | 耶 | ？ | 如 | 是 | 一 | 切 | ， | 靡 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 不 | 由 | 心 | 、 | 造 | 善 | 不 | 善 | ， | 身 | 業 | 、 | 語 | 業 | 、 | 意 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 業 | 所 | 致 | 。 | 而 | 心 | 無 | 色 | ， | 不 | 可 | 見 | 取 | ， | 但 | 是 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 虛 | 妄 | 。 | 諸 | 法 | 集 | 起 | ， | 畢 | 竟 | 無 | 主 | ， | 無 | 我 | 我 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 所 | 。 | 雖 | 各 | 隨 | 業 | 所 | 現 | 不 | 同 | ， | 而 | 實 | 於 | 中 | 無 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 有 | 作 | 者 | 。 | 故 | 一 | 切 | 法 | ， | 皆 | 不 | 思 | 議 | ， | 自 | 性 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 如 | 幻 | 。 | 智 | 者 | 知 | 已 | ， | 應 | 修 | 善 | 業 | 。 | 以 | 是 | 所 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 生 | 蘊 | 處 | 界 | 等 | ， | 皆 | 悉 | 端 | 正 | ， | 見 | 者 | 無 | 厭 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 2.([本段白話註解](../law-book/十善業道經白話.docx#a2))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 龍 | 王 | ！ | 汝 | 觀 | 佛 | 身 | ！ | 從 | 百 | 千 | 億 | 福 | 德 | 所 | 生 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 諸 | 相 | 莊 | 嚴 | ， | 光 | 明 | 顯 | 曜 | ， | 蔽 | 諸 | 大 | 眾 | ！ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 設 | 無 | 量 | 億 | 自 | 在 | 梵 | 王 | ， | 悉 | 不 | 復 | 現 | 。 | 其 | 有 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 瞻 | 仰 | 如 | 來 | 身 | 者 | ， | 豈 | 不 | 目 | 眩 | 。 | 汝 | 又 | 觀 | 此 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 諸 | 大 | 菩 | 薩 | 、 | 妙 | 色 | 嚴 | 淨 | ， | 一 | 切 | 皆 | 由 | 修 | 習 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 善 | 業 | 福 | 德 | 而 | 生 | 。 | 又 | 諸 | 天 | 龍 | 八 | 部 | 眾 | 等 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 大 | 威 | 勢 | 者 | ， | 亦 | 因 | 善 | 業 | 福 | 德 | 所 | 生 | 。 | 今 | 大 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 海 | 中 | 所 | 有 | 眾 | 生 | ， | 形 | 色 | 麤 | 鄙 | ， | 或 | 大 | 或 | 小 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 皆 | 由 | 自 | 心 | 種 | 種 | 想 | 念 | ， | 作 | 身 | 、 | 語 | 意 | 諸 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 不 | 善 | 業 | ， | 是 | 故 | 隨 | 業 | 各 | 自 | 受 | 報 | 。 | 汝 | 今 | 當 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 應 | 如 | 是 | 修 | 學 | ！ | 亦 | 令 | 眾 | 生 | ， | 了 | 達 | 因 | 果 | ！ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 修 | 習 | 善 | 業 | 。 | 汝 | 當 | 於 | 此 | ， | 正 | 見 | 不 | 動 | ！ | 勿 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 復 | 墮 | 在 | 斷 | 常 | 見 | 中 | ！ | 於 | 諸 | 福 | 田 | ， | 歡 | 喜 | 敬 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 養 | ！ | 是 | 故 | 汝 | 等 | ， | 亦 | 得 | 人 | 天 | 尊 | 敬 | 供 | 養 | ！ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 3.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a3)](../law-book/藥師本願功德經釋義.docx#a3))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 龍 | 王 | ！ | 當 | 知 | ！ | 菩 | 薩 | 有 | 一 | 法 | ， | 能 | 斷 | 一 | 切 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 諸 | 惡 | 道 | 苦 | 。 | 何 | 等 | 為 | 一 | ？ | 謂 | 於 | 晝 | 夜 | ， | 常 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 念 | 思 | 惟 | 觀 | 察 | 善 | 法 | 。 | 令 | 諸 | 善 | 法 | ， | 念 | 念 | 增 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 長 | ， | 不 | 容 | 毫 | 分 | 不 | 善 | 間 | 雜 | 。 | 是 | 即 | 能 | 令 | 諸 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 惡 | 永 | 斷 | ， | 善 | 法 | 圓 | 滿 | 。 | 常 | 得 | 親 | 近 | 諸 | 佛 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 菩 | 薩 | 、 | 及 | 餘 | 聖 | 眾 | 。 | 言 | 善 | 法 | 者 | ？ | 謂 | 人 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 天 | 身 | 、 | 聲 | 聞 | 菩 | 提 | 、 | 獨 | 覺 | 菩 | 提 | 、 | 無 | 上 | 菩 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 提 | ， | 皆 | 依 | 此 | 法 | ， | 以 | 為 | 根 | 本 | ， | 而 | 得 | 成 | 就 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 故 | 名 | 善 | 法 | 。 | 此 | 法 | 即 | 是 | 十 | 善 | 業 | 道 | 。 | 何 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 等 | 為 | 十 | ？ | 謂 | 能 | 永 | 斷 | 殺 | 生 | 、 | 偷 | 盜 | 、 | 邪 | 行 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 、 | 妄 | 語 | 、 | 兩 | 舌 | 、 | 惡 | 口 | 、 | 綺 | 語 | 、 | 貪 | 欲 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 瞋 | 恚 | 、 | 邪 | 見 | 。 | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 殺 | 生 | ， | 即 | 得 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 成 | 就 | 十 | 離 | 惱 | 法 | ： | 何 | 等 | 為 | 十 | ？ | 一 | 、 | 於 | 諸 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 眾 | 生 | 普 | 施 | 無 | 畏 | 。 | 二 | 、 | 常 | 於 | 眾 | 生 | 起 | 大 | 慈 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 心 | 。 | 三 | 、 | 永 | 斷 | 一 | 切 | 瞋 | 恚 | 習 | 氣 | 。 | 四 | 、 | 身 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 常 | 無 | 病 | 。 | 五 | 、 | 壽 | 命 | 長 | 遠 | 。 | 六 | 、 | 恆 | 為 | 非 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 人 | 之 | 所 | 守 | 護 | 。 | 七 | 、 | 常 | 無 | 惡 | 夢 | ， | 寢 | 覺 | 快 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 樂 | 。 | 八 | 、 | 滅 | 除 | 怨 | 結 | ， | 眾 | 怨 | 自 | 解 | 。 | 九 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 無 | 惡 | 道 | 怖 | 。 | 十 | 、 | 命 | 終 | 生 | 天 | 。 | 是 | 為 | 十 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 | 三 | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 成 | 佛 | 時 | ， | 得 | 佛 | 隨 | 心 | 自 | 在 | 壽 | 命 | 。 |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 4.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a4)](../law-book/藥師本願功德經釋義.docx#a3))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 復 | 次 | 、 | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 偷 | 盜 | ， | 即 | 得 | 十 | 種 | 可 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 保 | 信 | 法 | 。 | 何 | 等 | 為 | 十 | ？ | 一 | 、 | 資 | 財 | 盈 | 積 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 王 | 賊 | 水 | 火 | ， | 及 | 非 | 愛 | 子 | ， | 不 | 能 | 散 | 滅 | 。 | 二 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 、 | 多 | 人 | 愛 | 念 | 。 | 三 | 、 | 人 | 不 | 欺 | 負 | 。 | 四 | 、 | 十 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 方 | 讚 | 美 | 。 | 五 | 、 | 不 | 憂 | 損 | 害 | 。 | 六 | 、 | 善 | 名 | 流 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 布 | 。 | 七 | 、 | 處 | 眾 | 無 | 畏 | 。 | 八 | 、 | 財 | 命 | 色 | 力 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 安 | 樂 | ， | 辯 | 才 | 具 | 足 | 無 | 缺 | 。 | 九 | 、 | 常 | 懷 | 施 | 意 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 十 | 、 | 命 | 終 | 生 | 天 | 。 | 是 | 為 | 十 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 | 三 | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 得 | 證 | 清 | 淨 | 大 | 菩 | 提 | 智 | 。 | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 若 | 離 | 邪 | 行 | ， | 即 | 得 | 四 | 種 | 智 | 所 | 讚 | 法 | 。 | 何 | 等 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 為 | 四 | ？ | 一 | 、 | 諸 | 根 | 調 | 順 | 。 | 二 | 、 | 永 | 離 | 喧 | 掉 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 三 | 、 | 世 | 所 | 稱 | 歎 | 。 | 四 | 、 | 妻 | 莫 | 能 | 侵 | 。 | 是 | 為 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 四 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 | 三 | 菩 | 提 | 者 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 得 | 佛 | 丈 | 夫 | 隱 | 密 | 藏 | 相 | 。 |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 5.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a5)](../law-book/十善業道經白話.docx#a5))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 妄 | 語 | ， | 即 | 得 | 八 | 種 | 天 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 所 | 讚 | 法 | 。 | 何 | 等 | 為 | 八 | ？ | 一 | 、 | 口 | 常 | 清 | 淨 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 優 | 缽 | 華 | 香 | 。 | 二 | 、 | 為 | 諸 | 世 | 間 | 之 | 所 | 信 | 伏 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 三 | 發 | 言 | 成 | 證 | ， | 人 | 天 | 敬 | 愛 | 。 | 四 | 、 | 常 | 以 | 愛 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 語 | 安 | 慰 | 眾 | 生 | 。 | 五 | 、 | 得 | 勝 | 意 | 樂 | ， | 三 | 業 | 清 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 淨 | 。 | 六 | 、 | 言 | 無 | 誤 | 失 | ， | 心 | 常 | 歡 | 喜 | 。 | 七 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 發 | 言 | 尊 | 重 | ， | 人 | 天 | 奉 | 行 | 。 | 八 | 、 | 智 | 慧 | 殊 | 勝 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 勝 | 能 | 制 | 伏 | 。 | 是 | 為 | 八 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 多 | 羅 | 三 | 藐 | 三 | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 即 | 得 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 如 | 來 | 真 | 實 | 語 | 。 | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 兩 | 舌 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 即 | 得 | 五 | 種 | 不 | 可 | 壞 | 法 | 。 | 何 | 等 | 為 | 五 | ？ | 一 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 、 | 得 | 不 | 壞 | 身 | ， | 無 | 能 | 害 | 故 | 。 | 二 | 、 | 得 | 不 | 壞 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 眷 | 屬 | ， | 無 | 能 | 破 | 故 | 。 | 三 | 、 | 得 | 不 | 壞 | 信 | ， | 順 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 本 | 業 | 故 | 。 | 四 | 、 | 得 | 不 | 壞 | 法 | 行 | ， | 所 | 修 | 堅 | 固 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 故 | 。 | 五 | 、 | 得 | 不 | 壞 | 善 | 知 | 識 | ， | 不 | 誑 | 惑 | 故 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 是 | 為 | 五 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 | 三 | 菩 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 得 | 正 | 眷 | 屬 | 、 | 諸 | 魔 | 外 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 道 | ， | 不 | 能 | 沮 | 壞 | 。 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 6.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a5)](../law-book/十善業道經白話.docx#a6))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 惡 | 口 | ， | 即 | 得 | 成 | 就 | 八 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 種 | 淨 | 業 | 。 | 何 | 等 | 為 | 八 | ？ | 一 | 、 | 言 | 不 | 乖 | 度 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 二 | 、 | 言 | 皆 | 利 | 益 | 。 | 三 | 、 | 言 | 必 | 契 | 理 | 。 | 四 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 言 | 詞 | 美 | 妙 | 。 | 五 | 、 | 言 | 可 | 承 | 領 | 。 | 六 | 、 | 言 | 則 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 信 | 用 | 。 | 七 | 、 | 言 | 無 | 可 | 譏 | 。 | 八 | 、 | 言 | 盡 | 愛 | 樂 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 是 | 為 | 八 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 | 三 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 具 | 足 | 如 | 來 | ， | 梵 | 音 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 聲 | 相 | 。 | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 綺 | 語 | ， | 即 | 得 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 成 | 就 | 三 | 種 | 決 | 定 | 。 | 何 | 等 | 為 | 三 | ? | 一 | 、 | 定 | 為 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 智 | 人 | 所 | 愛 | 。 | 二 | 、 | 定 | 能 | 以 | 智 | ， | 如 | 實 | 答 | 問 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 三 | 、 | 定 | 於 | 人 | 天 | ， | 威 | 德 | 最 | 勝 | ， | 無 | 有 | 虛 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 妄 | 。 | 是 | 為 | 三 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 三 | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 即 | 得 | 如 | 來 | 諸 | 所 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 授 | 記 | ， | 皆 | 不 | 唐 | 捐 | 。 |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 7.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a5)](../law-book/十善業道經白話.docx#a7))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 貪 | 欲 | ， | 即 | 得 | 成 | 就 | 五 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 種 | 自 | 在 | 。 | 何 | 等 | 為 | 五 | ？ | 一 | 、 | 三 | 業 | 自 | 在 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 諸 | 根 | 具 | 足 | 故 | 。 | 二 | 、 | 財 | 物 | 自 | 在 | ， | 一 | 切 | 怨 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 賊 | 不 | 能 | 奪 | 故 | 。 | 三 | 、 | 福 | 德 | 自 | 在 | ， | 隨 | 心 | 所 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 欲 | ， | 物 | 皆 | 備 | 故 | 。 | 四 | 、 | 王 | 位 | 自 | 在 | ， | 珍 | 奇 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 妙 | 物 | ， | 皆 | 奉 | 獻 | 故 | 。 | 五 | 、 | 所 | 獲 | 之 | 物 | ， | 過 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 本 | 所 | 求 | ， | 百 | 倍 | 殊 | 勝 | ， | 由 | 於 | 昔 | 時 | 不 | 慳 | 嫉 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 故 | ， | 是 | 為 | 五 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 三 | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 三 | 界 | 特 | 尊 | ， | 皆 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 共 | 敬 | 養 | 。 | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 瞋 | 恚 | ， | 即 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 得 | 成 | 就 | 八 | 種 | 喜 | 悅 | 心 | 法 | 。 | 何 | 等 | 為 | 八 | ？ | 一 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 、 | 無 | 損 | 惱 | 心 | 。 | 二 | 、 | 無 | 瞋 | 恚 | 心 | 。 | 三 | 、 | 無 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 諍 | 訟 | 心 | 。 | 四 | 、 | 柔 | 和 | 質 | 直 | 心 | 。 | 五 | 、 | 得 | 聖 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 者 | 慈 | 心 | 。 | 六 | 、 | 常 | 作 | 利 | 益 | 安 | 眾 | 生 | 心 | 。 | 七 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 、 | 身 | 相 | 端 | 嚴 | ， | 眾 | 共 | 尊 | 敬 | 。 | 八 | 、 | 以 | 和 | 忍 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 故 | ， | 速 | 生 | 梵 | 世 | 。 | 是 | 為 | 八 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 | 三 | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 得 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 佛 | 無 | 礙 | 心 | ， | 觀 | 者 | 無 | 厭 | 。 |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 8.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a5)](../law-book/十善業道經白話.docx#a8))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 復 | 次 | ， | 龍 | 王 | ！ | 若 | 離 | 邪 | 見 | ， | 即 | 得 | 成 | 就 | 十 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 種 | 天 | 所 | 讚 | 法 | 。 | 何 | 等 | 為 | 十 | ？ | 一 | 、 | 得 | 真 | 善 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 意 | 樂 | ， | 真 | 善 | 等 | 侶 | 。 | 二 | 、 | 深 | 信 | 因 | 果 | ， | 寧 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 殞 | 身 | 命 | ， | 終 | 不 | 作 | 惡 | 。 | 三 | 、 | 惟 | 皈 | 依 | 佛 | 非 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 餘 | 天 | 等 | 。 | 四 | 、 | 直 | 心 | 正 | 見 | ， | 永 | 離 | 一 | 切 | 吉 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 凶 | 疑 | 網 | 。 | 五 | 、 | 常 | 生 | 人 | 天 | ， | 不 | 更 | 惡 | 道 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 六 | 、 | 無 | 量 | 福 | 慧 | ， | 轉 | 轉 | 增 | 勝 | 。 | 七 | 、 | 永 | 離 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 邪 | 道 | ， | 行 | 於 | 聖 | 道 | 。 | 八 | 、 | 不 | 起 | 身 | 見 | ， | 捨 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 諸 | 惡 | 業 | 。 | 九 | 、 | 住 | 無 | 礙 | 見 | 。 | 十 | 、 | 不 | 墮 | 諸 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 難 | 。 | 是 | 為 | 十 | 。 | 若 | 能 | 迴 | 向 | 阿 | 耨 | 多 | 羅 | 三 | 藐 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 三 | 菩 | 提 | 者 | ， | 後 | 成 | 佛 | 時 | ， | 速 | 證 | 一 | 切 | 佛 | 法 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 成 | 就 | 自 | 在 | 神 | 通 | 。 | 爾 | 時 | 世 | 尊 | ， | 復 | 告 | 龍 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 王 | 言 | ： | 若 | 有 | 菩 | 薩 | ， | 依 | 此 | 善 | 業 | ， | 於 | 修 | 道 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 時 | ， | 能 | 離 | 殺 | 害 | 而 | 行 | 施 | 故 | ， | 常 | 富 | 財 | 寶 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 無 | 能 | 侵 | 奪 | ， | 長 | 壽 | 無 | 夭 | ， | 不 | 為 | 一 | 切 | 怨 | 賊 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 損 | 害 | 。 | 離 | 不 | 與 | 取 | ， | 而 | 行 | 施 | 故 | ， | 常 | 富 | 財 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 寶 | ， | 無 | 能 | 侵 | 奪 | ， | 最 | 勝 | 無 | 比 | ， | 悉 | 能 | 備 | 集 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 諸 | 佛 | 法 | 藏 | 。 | 離 | 非 | 梵 | 行 | ， | 而 | 行 | 施 | 故 | ， | 常 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 | 能 | 侵 | 奪 | 。 | 其 | 家 | 貞 | 順 | ， | 母 | 及 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 妻 | 子 | ， | 無 | 有 | 能 | 以 | 欲 | 心 | 視 | 者 | 。 |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 9.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a9)](../law-book/十善業道經白話.docx#a9))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 離 | 虛 | 誑 | 語 | 而 | 行 | 施 | 故 | ， | 常 | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 | 能 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 侵 | 奪 | 。 | 離 | 眾 | 毀 | 謗 | ， | 攝 | 持 | 正 | 法 | 。 | 如 | 其 | 誓 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 願 | ， | 所 | 作 | 必 | 果 | 。 | 離 | 離 | 間 | 語 | 而 | 行 | 施 | 故 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 常 | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 | 能 | 侵 | 奪 | 。 | 眷 | 屬 | 和 | 睦 | ， | 同 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 一 | 志 | 樂 | ， | 恒 | 無 | 乖 | 怪 | 諍 | 。 | 離 | 麤 | 惡 | 語 | 而 | 行 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 施 | 故 | ， | 常 | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 | 能 | 侵 | 奪 | 。 | 一 | 切 | 眾 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 會 | ， | 歡 | 喜 | 歸 | 依 | ， | 言 | 皆 | 信 | 受 | ， | 無 | 違 | 拒 | 者 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 離 | 無 | 義 | 語 | 而 | 行 | 施 | 故 | ， | 常 | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 能 | 侵 | 奪 | ， | 言 | 不 | 虛 | 設 | ， | 人 | 皆 | 敬 | 受 | 。 | 能 | 善 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 方 | 便 | ， | 斷 | 諸 | 疑 | 惑 | 。 | 離 | 貪 | 求 | 心 | 而 | 行 | 施 | 故 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 常 | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 | 能 | 侵 | 奪 | ， | 一 | 切 | 所 | 有 | ， |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 悉 | 以 | 惠 | 捨 | ， | 信 | 解 | 堅 | 固 | ， | 具 | 大 | 威 | 力 | 。 | 離 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 忿 | 怒 | 心 | 而 | 行 | 施 | 故 | ， | 常 | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 | 能 | 侵 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 奪 | 。 | 速 | 自 | 成 | 就 | ， | 無 | 礙 | 心 | 智 | 。 | 諸 | 根 | 嚴 | 好 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 見 | 皆 | 敬 | 愛 | 。 | 離 | 邪 | 倒 | 心 | 而 | 行 | 施 | 故 | ， | 常 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 富 | 財 | 寶 | ， | 無 | 能 | 侵 | 奪 | ， | 恒 | 生 | 正 | 見 | 敬 | 信 | 之 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 家 | ， | 見 | 佛 | 聞 | 法 | ， | 供 | 養 | 眾 | 僧 | ， | 常 | 不 | 忘 | 失 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 大 | 菩 | 提 | 心 | 。 | 是 | 為 | 大 | 士 | 修 | 菩 | 薩 | 薩 | 時 | ， | 行 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 十 | 善 | 業 | 嚴 | 以 | 施 | 莊 | 嚴 | ， | 所 | 獲 | 大 | 利 | 如 | 是 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 10.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a10)](../law-book/十善業道經白話.docx#a10))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 龍 | 王 | ！ | 舉 | 要 | 言 | 之 | ， | 行 | 十 | 善 | 道 | ， | 以 | 戒 | 莊 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 嚴 | 故 | ， | 能 | 生 | 一 | 切 | 佛 | 法 | 義 | 利 | ， | 滿 | 足 | 大 | 願 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 忍 | 辱 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 得 | 佛 | 圓 | 音 | ， | 具 | 眾 | 相 | 好 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 精 | 進 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 能 | 破 | 魔 | 怨 | ， | 入 | 佛 | 法 | 藏 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 定 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 能 | 生 | 念 | 、 | 慧 | 、 | 慚 | 、 | 愧 | 、 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 輕 | 安 | 。 | 慧 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 能 | 斷 | 一 | 切 | 分 | 別 | 妄 | 見 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 慈 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 於 | 諸 | 眾 | 生 | ， | 不 | 起 | 惱 | 害 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 悲 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 愍 | 諸 | 眾 | 生 | ， | 常 | 不 | 厭 | 捨 | 。 | 喜 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 見 | 修 | 善 | 者 | ， | 心 | 無 | 嫌 | 嫉 | 。 | 捨 | 莊 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 嚴 | 故 | ， | 於 | 順 | 違 | 境 | ， | 無 | 愛 | 恚 | 心 | 。 | 四 | 攝 | 莊 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 嚴 | 故 | ， | 常 | 勤 | 攝 | 化 | 一 | 切 | 眾 | 生 | 。 | 念 | 處 | 莊 | 嚴 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 故 | ， | 善 | 能 | 修 | 習 | 四 | 念 | 處 | 觀 | 。 | 正 | 勤 | 莊 | 嚴 | 故 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 悉 | 能 | 斷 | 除 | 一 | 切 | 不 | 善 | 法 | ， | 成 | 一 | 切 | 善 | 法 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 神 | 足 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 恆 | 令 | 身 | 心 | 輕 | 安 | 快 | 樂 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 。 | 五 | 根 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 深 | 信 | 堅 | 固 | ， | 精 | 進 | 匪 | 懈 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | ， | 常 | 無 | 迷 | 妄 | ， | 寂 | 然 | 調 | 順 | ， | 斷 | 諸 | 煩 | 惱 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 力 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 眾 | 怨 | 盡 | 滅 | ， | 無 | 能 | 壞 | 者 | 。 | 覺 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 支 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 常 | 善 | 覺 | 悟 | 一 | 切 | 諸 | 法 | 。 | 正 | 道 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 得 | 正 | 智 | 慧 | ， | 常 | 現 | 在 | 前 | 。 |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |

## 11.([[本段白話註解](../law-book_1226/十善業道經白話.docx#a11)](../law-book/十善業道經白話.docx#a11))

|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
|  | 止 | 莊 | 嚴 | 故 | ， | 悉 | 能 | 滌 | 除 | 一 | 切 | 結 | 使 | 。 | 觀 | 莊 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 嚴 | 故 | ， | 能 | 如 | 實 | 知 | 諸 | 法 | 自 | 性 | 。 | 方 | 便 | 莊 | 嚴 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 故 | ， | 速 | 得 | 成 | 滿 | ， | 為 | 、 | 無 | 為 | 樂 | 。 | 龍 | 王 | ！ |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 當 | 知 | 此 | 十 | 善 | 業 | ， | 乃 | 至 | 能 | 令 | 十 | 力 | 、 | 無 | 畏 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 、 | 十 | 八 | 不 | 共 | 、 | 一 | 切 | 佛 | 法 | ， | 皆 | 得 | 圓 | 滿 | 。 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 是 | 故 | 汝 | 等 | ， | 應 | 勤 | 修 | 學 | 。 | 龍 | 王 | ！ | 譬 | 如 | 一 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 切 | 城 | 邑 | 、 | 聚 | 落 | ， | 皆 | 依 | 大 | 地 | 而 | 得 | 安 | 住 | ； |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 一 | 切 | 藥 | 草 | 、 | 卉 | 木 | 、 | 叢 | 林 | ， | 亦 | 皆 | 依 | 地 | 而 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 得 | 生 | 長 | 。 | 此 | 十 | 善 | 道 | ， | 亦 | 復 | 如 | 是 | 。 | 一 | 切 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 人 | 天 | ， | 依 | 之 | 而 | 立 | 。 | 一 | 切 | 聲 | 聞 | ， | 獨 | 覺 | 菩 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 提 | ， | 諸 | 菩 | 薩 | 行 | ， | 一 | 切 | 佛 | 法 | ， | 咸 | 共 | 依 | 此 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 十 | 善 | 大 | 地 | 而 | 得 | 成 | 就 | 。 | 佛 | 說 | 此 | 經 | 已 | ， | 娑 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 竭 | 羅 | 龍 | 王 | ， | 及 | 諸 | 大 | 眾 | ！ | 一 | 切 | 世 | 間 | 、 | 天 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 、 | 人 | 、 | 阿 | 修 | 羅 | 等 | ， | 皆 | 大 | 歡 | 喜 | ， | 信 | 受 | 奉 |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  | 行 | 。 |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |
|  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |  |